लता केसी

ई—मेल-latakc7@gmail.com

बराबर

ऑफिस के लिए घर से निकलते समय पति ने पत्नी को गले लगाया और कहा, "शाम को मिलते हैं।"

पत्नी ने भी वैसा ही किया और बोली, "जैसे भी हो, आज दोपहर का समय तय कर लो। दोनों शॉपिंग चलते हैं!"

"जैसे ही समय मिलेगा, मैं फोन करूँगा।" इतना कहकर उसने बाइक आगे बढ़ा दी और आँखों से ओझल हो गया।

वह भी सोलह शृंगार करके घर से निकली और दोस्त की बाइक पर बैठकर हवा में उड़न-छु हो गई। कुछ देर बाद दोनों एक रेस्टोरेंट में दाखिल हुए। जब दोनों रेस्टोरेंट के बंद कमरे में मस्ती मे खोने लगे थे, तभी फोन की घंटी बजी—"सॉरी डार्लिंगि! आज एक मीटिंग है। घर आने में थोड़ी देर हो सकती है। हम कल चले चलेंगे।"

बॉय फ्रेंड की बाँहों में लिपटी उसने फोन पर जवाब दिया, "ठीक है। शाम को मैं तुम्हारा मनपसंद खाना बनाऊँगी। जल्दी आना।" कुछ समय बिताने के बाद उसने बॉयफ्रेंड से कहा, "अब वापस चलते हैं?"

बॉयफ्रेंड ने हँसते हुए कहा, "इतनी जल्दी क्या है? तुम्हारा पति तो मीटिंग में व्यस्त है।"

"हाँ; लेकिन काम ख़त्म होने के बाद यहाँ क्यों रुकें?" उसने जवाब दिया। जब दोनों बाहर निकल रहे थे, बाहर से एक और जोड़ा अन्दर आ रहा था। आने-जाने वाले दोनों युगल देखते रहे गए। उनकी आँखें चार हो गईं। आने वाले युगल में उसका पति और उसके आलिंगन में एक लड़की थी।

हिन्दी अनुवाद : लेखिका द्वारा स्वयं

काठमाण्डौं, नेपाल की रहनेवाली लता के. सि. 'हाम्रो लघुकथा' केन्द्र की संस्थापक अध्यक्ष और एक चर्चित लघुकथाकार हैं । 'पूर्णप्रसाद ब्राह्मण लघुकथा सम्मान' से सम्मानित के. सी. के तीन लघुकथा संग्रह प्रकाशित हैं । यह एक स्वतन्त्र लघुकथा है।